सीखने के संकेतकों को समझना

सीखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। सीखने की प्रक्रिया अनवरत रूप से चलती रहती है। पर्यावरणीय गतिविधियों एवं ज्ञान के सन्दर्भ में भी सीखने की प्रक्रिया सामान्य रूप से चलती रहती है क्योंकि बालक अपने परिवार एवं समाज में अनेक प्रकार की गतिविधियों को सम्पन्न होते देखता है। उन क्रियाओं को वह स्वयं भी करने का प्रयास करता है तथा धीरे-धीरे वह सभी प्रकार की स्थितियों को आत्मसात करने लगता है और अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। बालक के सीखने की प्रक्रिया निम्न माध्यम से सम्पन्न होती है —

(1.) **करके सीखना (Learning by Doing) ⇒**

सामान्य रूप से बालक किसी भी कार्य को करके सीखने में अधिक विश्वास रखता है। बालक किसी कार्य को अपने परिवार में करते देखता है तो उस कार्य को करने का प्रयास करता है। जैसे - बालक अपने पिता को कृषि कार्य करते हुए देखता है तो वह भी इन उन कार्यों को करने का प्रयास करता है जिन्हे वह सरलता से कर सकता है। इस प्रकार अनेक पर्यावरणीय क्रियाओं को बालक करके ही ~~सीखता~~ सीखने का प्रयास करता है।

(2.) **अनुभव द्वारा सीखना ⇒**

बालक विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय तथ्यों के बारे में स्वयं अनुभव करके सीखता है। जैसे — आग जल रही है तो बालक उसके पास पहुंचता है तो उसे ताप का अनुभव होता है। इसमें बालक ताप या ऊष्मा के बारे में समझ जाता है कि पर्यावरण तत्व में सूर्य या आग ऊष्मा के स्रोत हैं।

(3.) **मूल प्रवृत्तियों द्वारा सीखना ⇒**

बालक विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय एवं व्यक्तिगत क्रियाओं को मूल प्रवृत्ति के आधार पर सीखता है। जैसे — बालक को भूख लगती है तो उसे परिवार में विभिन्न प्रकार का भोजन उपलब्ध होता है। जो खाद्य पदार्थ उसे रुचिकर लगते हैं उसके बारे में उसे ज्ञान प्राप्त होता है।

(4.) **अभ्यास द्वारा सीखना ⇒**

सीखने की प्रक्रिया में अभ्यास का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी प्रक्रिया को सम्पन्न करने में प्रथम बार बालक द्वारा अनेक त्रुटियाँ की जाती हैं परन्तु उनके बार-बार

Scanned with CamScanner

अभ्यास से धीरे-धीरे त्रुटियाँ कम होकर बालक वह क्रिया त्रुटिरहित रूप में पूर्ण कर लेता है। उदाहरण – साइकिल चलाना सीखते समय पहले कई बार गिरकर बालक असफल रहता है किन्तु बार-बार अभ्यास द्वारा वह साइकिल चलाना सीख जाता है।

(5.) उपयोगिता द्वारा सीखना ⇒

बालक के जीवन में विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ उपयोगी तथा अनुपयोगी रूप में पायी जाती हैं। जो क्रियाएं उपयोगी रूप में पायी जाती हैं उनको छात्र अधिक शीघ्रता से सीखता है तथा अनुपयोगी क्रियाओं को करने में कोई भी रुचि नहीं दिखाता।

(6.) संघर्ष द्वारा सीखना ⇒

सीखने की क्रिया में छात्रों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों हेतु संघर्ष करना पड़ता है। इसके आधार पर भी वह सीखने का प्रयास करते हैं। जब बालक के समक्ष उसके जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं तो उनके समाधान की अनेक विधियों द्वारा उसके ज्ञान में वृद्धि होती है।

(7.) अनुकरण द्वारा सीखना ⇒

बालक अपने परिवेश में भिन्न व्यक्तियों को अपना आदर्श मानता है उनके कार्य एवं व्यवहार में समाहित गुणों एवं श्रेष्ठताओं को अनुकरण द्वारा सीखता है, जैसे – बालक अपने शिक्षक को गरीब व्यक्तियों की सहायता करते देखता है तो वह स्वयं भी दूसरे व्यक्तियों की सहायता करना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार कोई भी कार्य अनुकरण के द्वारा जल्दी सीखता है।

(8.) प्रेरणा द्वारा सीखना ⇒

जब छात्रों को किसी कार्य को करने के लिए शिक्षक एवं अभिभावकों द्वारा प्रेरणा प्रदान की जाती है तो उसे कार्य के प्रति छात्रों की रुचि उत्पन्न होती है क्योंकि उस कार्य को विद्यालय एवं परिवार दोनों में श्रेष्ठ माना जाता है। इस प्रकार के कार्यों को छात्र शीघ्रता से सीखते हैं।

(9.) क्षेत्र भ्रमण द्वारा सीखना ⇒

पर्यावरणीय अध्ययन की क्रियाओं को छात्र सामान्य रूप से भ्रमण द्वारा तीव्र गति से सीखता है क्योंकि इस क्रिया में छात्र विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप में देखता है तथा उनकी विशेषताओं से परिचित

Scanned with CamScanner

होता है। इसमें छात्र अपने साथियों एवं शिक्षकों से विभिन्न प्रकार के प्रश्न करके उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करता है तथा साथ-साथ उत्तरों का सत्यापन करता है। इस प्रकार उनका पर्यावरणीय ज्ञान स्थायी होता है।

(10.) तत्परता द्वारा सीखना ⇒

छात्रों में तत्परता के नियम के आधार पर भी सीखने की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। जब छात्र पूर्ण-मनोवेग से किसी क्रिया को सीखने का प्रयास करता है तो उस क्रिया को सरलता एवं शीघ्रता से सीख जाता है। इसके विपरीत स्थिति में जब वह किसी क्रिया को शारीरिक एवं मानसिक रूप से सीखने के लिए तैयार नहीं होता तो वह उस क्रिया को नहीं सीख पाता है। अतः प्रत्येक क्रिया को सीखने के लिए छात्र को शारीरिक एवं मानसिक रूप से तत्पर होना चाहिए।

(11.) प्रयोग द्वारा सीखना ⇒

छात्र किसी क्रिया को व्याख्यान या कथन के स्थान पर प्रयोग प्रदर्शन द्वारा अधिक रुचिपूर्ण ढंग से सीखता है। उदाहरण :- प्रकाश सीधी रेखा में चलता है या पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है इस प्रक्रिया को प्रयोग द्वारा प्रदर्शित किया जाय तो छात्र तीव्र गति से इस क्रिया को सीखेगा।

Scanned with CamScanner